देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
November 2021
Issue 14, Vol. 5 (1)
Impact Factor 3.811

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

बाल विमर्श विशेषांक

डॉ. मुकेश चंद
विशेषांक सम्पादक

डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट
सम्पादक

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 14 ISSUE-5 (1) (नवम्बर 2021) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादक :

डॉ. मुकेश चंद

एम.ए., एम.फिल., सेट, नेट–जेआरएफ, पी–एच.डी. (हिंदी)
बी.एड., एम.ए.एड., नेट (शिक्षा शास्त्र)
हिंदी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाड़ी, धौलपुर (राज.)

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल–एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर–335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी–127021 (हरियाणा)

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय		9-9
2.	बाल-विमर्श की अवधारणा एवं स्वरूप	नमिता शुक्ला	10-15
3.	बाल-साहित्य लेखन के आधारभूत तत्व	सतीश कुमार भारद्वाज	16-19
4.	बाल-साहित्य की चुनौतियाँ : कुछ वैचारिक पक्ष	डॉ. सिन्धु. एस.एल	20-22
5.	बाल-साहित्य संबंधी कुछ जरूरी चिंताएँ	डॉ. जाहिदुल दीवान	23-27
6.	बाल-साहित्य की चुनौतियाँ	डॉ. पूनम यादव	28-31
7.	हिंदी साहित्य में बाल विमर्श का उद्भव और विकास	डॉ. सुशील कुमार	32-35
8.	आलोचकों की दृष्टि से सूरदास का बाल-वर्णन	डॉ. मुकेश चंद	36-42
9.	सूर साहित्य में बाल-विमर्श	अर्चना मिश्रा	43-45
10.	आधुनिक जीवन एवं बाल-विमर्श	अनिल कौशिक	46-49
11.	प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' एवं 'मिट्ठू' में बाल मनोविज्ञान	डॉ. प्रेम चन्द भार्गव	50-54
12.	प्रेमचंद के कथा-साहित्य में बाल-विमर्श	डॉ. आशीष कुमार तिवारी	55-60
13.	बाल-विमर्श की दृष्टि से 'आपका बंटी' का विश्लेषण	डॉ. अंबिली. टी	61-65
14.	बाल मनोविज्ञान के परिदृश्य में 'आपका बंटी'	डॉ. रतीश सी. नायर	66-70
15.	'छिन्नमस्ता' उपन्यास में बाल यौन-शोषण	पारूल	71-74
16.	'अपराध' में चित्रित बाल मानसिकता	डॉ. अन्सा ए	75-77
17.	दिविक रमेश के बाल-साहित्य में वैज्ञानिक चेतना	दीपशिखा शर्मा	78-82
18.	हिंदी बाल कहानी : स्वातंत्र्योत्तर युग	श्रीनिवास नायक	83-85
19.	बाल साहित्य की सशक्त विदा-बाल कविताएँ	डॉ. सुमा. टी. रोडानवार	86-89
20.	बच्चों के विकास में बाल कहानी साहित्य	कुसुमा. के. आर	90-92
21.	हिंदी बाल उपन्यास साहित्य में क्षमा शर्मा का स्थान	डॉ. अनघा ए.एस	93-98

22.	बाल अनुभूतियों के सिद्धहस्त रचनाकार : श्याम सुंदर श्रीवास्तव 'कोमल'	डॉ. आजेंद्र प्रताप सिंह	99–102
23.	तमिल बाल-साहित्यकार श्री.विलियन द्वारा लिखित दो उपन्यासों में निहित बालकोपयोगी विषय	के. कविता	103–107
24.	बाल-विमर्श : बाल मन की समझ	अनिल कुमार	108–111
25.	कोरोना काल और बाल मजदूरी	रेशमा त्रिपाठी	112–118
26.	डॉ. हरिकृष्ण देवसरे की बाल कहानियों में राष्ट्रीय चेतना	डॉ. आनंद र. बक्षी	119–122

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
November 2021 Page No. : 119-122
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे की बाल कहानियों में राष्ट्रीय चेतना

-डॉ. आनंद र. बक्षी
सहाय्यक प्रायापक, हिन्दी विभाग, कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, चिखलदरा।

भारत में प्राचीन समय से ही लोरियॉं और परी कथाओं के रूप में बाल साहित्य विद्यमान हैं। पाश्चात्य देशों के अनुरूप यह विद्या भारत में कोई नई बात नहीं है। भारत में इसका प्रचलन बहुत पुराना रहा है। भारत में सैकडों वर्षो से यह कथाऍं बालकों के साथ–साथ वृद्ध तथा युवा वर्ग का मनोरंजन एवं संस्कारों को देता आया है। पंचतंत्र, हितोपदेश, कथा सरित्सागर, सिंहासन बत्तीसी इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मौजूद है। यह कथा कृतियॉं आज भी उतनी ही लोकप्रिय हैं। परन्तु आज बालसाहित्य का परिवेश, उद्देश्य एवं विचार शैली में बदलाव आया है। आज बालसाहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन ही नहीं है, बल्कि बच्चों में संस्कार, ज्ञान, नए युग की समस्याऍं जिज्ञासा आदि गुणों का विकास करना है। नीतिग्रन्थ एवं आचार ग्रन्थों का पठन–पाठन इन नन्हें राजकुमारों के लिए व्यर्थ हैं। इन्हें तो ऐसे माध्यम की जरूरत हैं जिसमें इनकी रूचि हो, इनका मन उसमें लगे और कुछ ज्ञान भी इन्हें प्राप्त हो जाए। इनके सामने कुछ ऐसा परोसा जाय कि जिससे इनमें औत्सुक्य भाव निर्माण हो और साथ ही इनके जीवन पर वह ऐसा असर हो जाए जिससे इनके चरित्र का निर्माण हो और भविष्य सूर्य के जैसे चमके। 'पंचतंत्र' के रचियता 'विष्णु शर्मा' यह जानते थे इसलिए उन्होने कहा है–

"यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भेवत।
कथाच्छलेन बालानां नीतिस्तदिह कथ्यथे।।"[1]

अर्थात् जिस प्रकार किसी नये पात्र या घडे में कोई संस्कार विद्यमान नही रहते उसी प्रकार बच्चों की अवस्था होती है। उन्हें हम जो रूप प्रदान करना चाहते हैं, वैसा आकार दे सकते हैं। इसलिए उन्हे तो कथा आदि के द्वारा ही नीति के संस्कार आदि बताने चाहिए। 'पंचतंत्र' को विश्व की सबसे प्राचीन पुस्तक मानी जाती है। इसलिए विष्णु शर्मा की इस परिभाषा को बालसाहित्य की सबसे पहली परिभाषा मानी जा सकती है।

बालसाहित्य वही सर्वोत्तम कहा जाता है जो राष्ट्रभक्ति की शिक्षा देता है। बच्चों में राष्ट्र के प्रति प्रेम जागरूक करने का भी माध्यम बालसाहित्य से अच्छा दुसरा कोई नहीं हो सकता। राष्ट्र के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है इसका ज्ञान भी हमें बाल साहित्य के व्दारा बच्चों को देना चाहिए, क्योंकि आज के बच्चें कल देश भविष्य कहलाते है। इसीलिए अधिकांश विकसित देशों ने राष्ट्रभक्ति को बाल सहित्य की प्रमुख विशेषता के रूप में स्थापित किया है। बच्चों को बचपन से ही राष्ट्रीय भावना की शिक्षा दी गई तो आगे चलकर बच्चे सच्चे राष्ट्रभक्त और अच्छे नागरिक बन सकते हैं। कहानियों के माध्यम से हम उन्हें राष्ट्रभक्ति परक महापुरूषों की जीवनियां या फिर उनके जीवन के ऐसे प्रसंग या घटनाओं से परिचित कराएं जिनसे उन्हें प्रेरणा मिले। ऐसे महापुरूष एवं

क्रांतिकारी हुए है, जिसके जीवन को हम बच्चों के सामने आदर्श के रूप में रख सकते है। जिसका आदर्श लेकर बच्चे इस मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह कर सकें। प्रस्तुत कहानी द्वारा एक ऐसा ही उदाहरण डॉ. देवसरे जी बच्चों के सम्मुख रखते है –

''इसके बाद यानि 5 अप्रैल, 1929 को दिल्ली, में केन्द्रीय असेम्बली की बैठक में बम फेंका गया। चारों ओर भगदड मच गई। यह बम भगतसिंह और उनके साथी बटुकेश्वर दत्त ने फेंका था। बम फैंककर वे भागे नहीं। 'इन्कलाब जिन्दाबाद', साम्राज्यवाद का नाश हो, के नारे लगाते रहे दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें फांसी की सजा दी गई। सारे देश ने इस फैसले का विरोध किया। फांसी रोकने की बहुत कोशिश की गई किंतु सब बेकार। अंगरेजों की हुकूमत ने 23 मार्च, 1939 को भगत सिंह को फांसी पर लटका दिया। सारा देश हिल उठा था। उस समय पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था– 'हम सब मिलकर भी उन्हें न बचा सके। वे हम सबके प्यारे थे। उनका महान त्याग तथा साहस भारत के नौजवानों के लिए एक प्रेरणा है।''[2]

प्रस्तुत उदाहरण देश के आजादी में भगतसिंह और उनके साथी बटुकेश्वर दत्त ने किस प्रकार देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया है यह दर्शाता हैं। जिससे हम प्रेरणा लेकर मातृभूमि पर मर मिटने के लिये तैयार हो जाते है। अप्रैल 1929 को दिल्ली में 'शहीद भगत सिंह' और 'बटुकेश्वर दत्त' ने केन्द्रीय असेम्ब्ली की बैठक में 'साम्राज्यवाद' का विरोध करते हुये बम फैंका था। बम फेंककर वे भागे नहीं थे। भगत सिंह को देश के लिये यह त्याग भारत के नौजवानों के लिए एक प्रेरणा है। इस प्रकार की घटनाओं को लेकर हम बाल पाठकों के दिलों में देश प्रेम की भावनाओं को जगा सकते है। राष्ट्र प्रेम के लिए प्रेरित कर सकते है। आजादी पाने के लिये कितने ही ऐसे महापुरूष हैं जिन्होने अपने प्राणों की आहुति दी है। त्याग किया है, अगर हमें अपने देश की आजादी को बरकरार रखना है तो हमें हर वक्त बलिदान के लिये तैयार रहना होगा।

''सेठजी ने फटाफट तिजोरियां, पेटियां, थैलियां आदि खोल दी। चारों ओर धन बिखर गया। नोटों के बंडल, सोने–चांदी के आभूषण, हीरे–मोती की मालाएं स्वयं सेठजी इतने धन को देखकर हैरान थे। फिर यह दुगुना हो गया तो कहना ही क्या ? यह सोचते ही वह देवी लक्ष्मी से बोले जल्दी करो देवी। इस धन को दुगुना कर दो। इन तिजोरियों को खुला रखना अच्छा नहीं है। कहीं इनकम टैक्स वालों को पता लग गया तो आफत आ जाएगी। फिर देवी को कुछ सोचते हुए देखकर बोले– आप क्या सोच रही है ? अब देर क्यों ?

लेकिन तभी कुछ लोगों के अंदर आने की आहट मिली। सेठजी ने घबराकर देखा तो ऑखें फटी की फटी रह गई। पुलिस इंस्पेक्टर, इनकम टैक्स इन्स्पेक्टर, घोष बाबू और तीन सिपाही कमरे में घुसते चले आ रहे थे। पुलिस इंस्पेक्टर ने कमरे में प्रवेश करते हुए लक्ष्मीजी से कहा–मिस रीता आप बाहर चलिए। सिपाही सेठजी की गिरफ्तारी करों। और बेचारी सेठानी। वह तो एक ओर बेहोश होकर गठरी बनी पडी थी।

शहर में बिजली फिर चालू हो गई थी। पुलिस की गाडी में बैठने के लिए जब सेठजी घुसे तो देखा कि उसमें मुनीमजी और उनका मित्र मैकेनिक पहले से बैठे हुए है। गाडी स्टार्ट हुई। घोष बाबू बोले बाहेर देवी लक्ष्म। तेरे भी रूप अनेक है।''[3]

लेखक डॉ. देवसरेजी हमें यह बताना चाहते है कि हमें राष्ट्र के प्रति ईमानदार होना चाहिए। आज के युग में बडे–बडे नेता, उद्योगपति, फिल्मी स्टार इनकम टैक्स की चोरी करते हैं। पुरी तरह इनकम टैक्स नहीं भरते। क्योंकि उनके पास कालाधन होता है। गलत रास्ते से वे लोग धन जमा करते हैं। अगर हम इनकम टैक्स

नहीं देंगे तो राष्ट्र की प्रगति नहीं हो पायेगी। देश का विकास इन्हीं पैसों से किया जाता है। इनकम टैक्स से रोजगार उपलब्ध हो सकता है। अगर सभी ईमानदारी से अपना आयकर जमा करें तो देश के विकास के साथ–साथ शिक्षा प्रणाली और रोजगार के क्षेत्र में भी उन्नति हो सकती है। देश के प्रति यह हमारा कर्तव्य है कि हम ईमानदारी से इनकम टैक्स सरकार के पास जमा करें। राष्ट्र के विकास में अपना सहयोग प्रदान करें।

जिस प्रकार से यहां बताया गया है कि सेठ अपने धन के लालच में उसे दुगुना करने की कोशिश में गिरफ्तार हो जाता है। धन एक जगह संचित होने लगा तो दूसरे जगह अभाव पैदा होता है। मतलब यह कि अमीर और अमीर होता है और गरीब और गरीब। इसीलिए धन का संचय हो तो राष्ट्र घातक साबित होता है।

"उन दिनों अंगरेजों और जापानियों के बीच युध्द हो रहा था। अंगरेजी सेना में भारतीय सिपाही भी थे। अंगरेज जनरल भारतीय सैनिकों को आगे रखते। युध्द में बहुत से भारतीय सैनिक कैद कर लिए गए। सुभाषचन्द्र बोस ने जपान सरकार से बातचीत की उन बंदियों को छुडाया और उनकी सहायता से आजाद हिंद फौज तैयार की वह उस सेना के नेता बने। तभी से उन्हें लोग नेताजी कहने लगे। आजाद हिन्द फौज ने अंगरेजों से मोर्चा लिया। अंगरेजों के दात खट्टे हो गए।"[4]

हिदुस्तान पर जब अंगरेजों का राज था और हिंदुस्तान को अंगरेंजों से आजादी दिलाने के लिये सुभाषचंन्द्र बोस ने 'आजाद हिंद फौज' की स्थापना की अंगरेजों और जापानियों के बीच जो युध्द चल रहा था तब अंगरेजी सेना में भारतीय सिपाही भी थे। जिन्हें अंगरेज जनरल आगे रखते थे। जिस कारण बहुत से भारतीय सैनिक जापान व्दारा कैद कर लिए गए। 'नेताजी सुभाषचन्द्र बोस' ने जापान सरकार से बातचीत की और बंदियों को छुडा कर 'आजाद हिंद फौज' की स्थापना की। और आजाद हिंद फौज ने अंगरेजी सैनिकों से मोर्चा लिया और अंगरेजी सैनिकों के दांत खट्टे हो गये। डॉ. देवसरेजी बाल पाठकों को यह बताना चाहते है कि हिन्दुस्तान की आजादी के लिए सुभाषचन्द्र बोस ने जो त्याग किया है जो बलिदान दिया है उसे हमें हमेशा याद करना चाहिए। जिससे प्रेरणा लेकर बच्चों में भी राष्ट्रप्रेम जागरूक हो पायेगा।

"उसी दिन से हर साल 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से इस देश के प्रधानमंत्री देश को अपना संदेश देते है। इस दिन जहां यह याद करते है कि इस आजादी के लिए लोगों ने कितनी कीमत चुकाई है, वहीं यह भी सोचते है कि आजादी की रक्षा के लिए देश की खुशहाली के लिए हमें क्या करना है, क्या कर चुके है। अपनी आजादी की रक्षा के लिए जहां यह जरूरी होता है कि सैनिक ताकत काफी, बढी–चढी हो, वहीं यह भी जरूरी है कि देश के भीतर शांति रहे इसीलिये स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री ने नारा दिया था, 'जय जवान, जय किसान'। सीमा के मोर्चे पर जवान है तो घरेलू मोर्चे पर उत्पादन करने वाला किसान है। आजादी की हर वर्ष गांठ हमें अपने कर्तव्यों की याद दिलाती है।"[5]

डॉ. देवसरे जी बाल पाठकों के दिलों में राष्ट्र के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है इस चेतना को जगाने की कोशिश करते हैं। 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हो गया यह दिन हमें याद दिलाता है कि आजादी पाने के लिए लोगों ने अपनी जान देकर इसकी कीमत चुकाई है और इस आजादी की रक्षा के लिए और खुशहाली के लिए अब हमारा कर्तव्य है और उसे हम किस प्रकार से निभा सकते हैं। देश की आजादी की रक्षा के लिए यह जरूरी है कि हमें अपनी सैनिक ताकत को बढाना चाहिये। लेकिन यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि देश के भीतर भी शांति बनी रहें। स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्रीने जो नारा हमें दिया है– 'जय जवान, जय किसान' का

सीमा पर रहकर जवान अपने कर्तव्य का पालन करता है तो घरेलू मोर्चे पर किसान अपने कर्तव्य का पालन करता है। देश का अन्नदाता बनकर सभी का पेट भरते है। देश के प्रत्येक नागरिक को अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए। तभी यह देश सुखी, समृध्द और खुशहाल बन पायेगा।

अधिकांश विद्वान और राष्ट्र की नीति यही है कि बालसाहित्य वही उत्तम है जो बच्चों को राष्ट्रभक्ति की शिक्षा देता है। अधिकांश विकसित देशों ने राष्ट्रभक्ति को बालसाहित्य की प्रमुख विशेषता के रूप में तो स्थापित किया ही है साथ ही अमेरिका, जापान, इंग्लैण्ड, रशिया, जैसे देश तो इसे बालसाहित्य का अविभाज्य अंग समझते हैं। वैसे तो हमारे भारतीय समीक्षकों ने बालसाहित्य के बारे में स्पष्ट दिशा निर्देश नही किये हैं कि बालसाहित्य कि विशेषताएँ क्या है? या बालसाहित्य की समीक्षा किन तत्त्वों पर की जाए? परन्तु यह तो निर्विवाद है कि, राष्ट्रभक्ति हमारे भारतीय बालकाव्य की विशेषता होनी चाहिए। बच्चों को बचपन से ही हम अगर राष्ट्रप्रेम की भावना सीखा दे तो वे बड़े होकर सच्चे राष्ट्रभक्त और अच्छे नागरिक बन सकते हैं।

बाल–काव्य के माध्यम से हम उन्हे राष्ट्रभक्ति परख गीत, महापुरूषों की जीवननियॉ या फिर उनके जीवन के ऐसे प्रसंग अथवा घटनाओं से परिचित कराएँ जिनसे उन्हें प्रेरणा मिले। हमारे यहॉ इतिहास में ऐसे महापुरूष, राजा महाराजा हुऐ है, क्रांतिकारी हुए हैं जिनके जीवन को हम बच्चों के सामने आदर्श के रूप रख सकते हैं। जिनसे बच्चे उनसे आदर्श ग्रहण कर अपने जीवन में उतार इस मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह कर सकें। हम ऐसी कहानियों का सृजन करें जिसें पढकर बच्चे राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत–प्रोत हो जाएँ।

संदर्भ :-

1. डॉ. हरिकृष्ण देवसरे–हिन्दी बालसाहित्य एक अध्ययन पृ. सं.–05
2. डॉ. हरिकृष्ण देवसरे–महिनों की कहानियां–मार्च का मेहमान, पृ. सं.21
3. डॉ. हरिकृष्ण देवसरे–बच्चा लोग ताली बजाओ–लक्ष्मी तेरे रूप अनेक–पृ. सं.–22–23
4. डॉ. हरिकृष्ण देवसरे–महिनों की कहानियां–जनवरी की कहानी पृ. सं.–9
5. डॉ. हरिकृष्ण देवसरे–महिनों की कहानियां–अगस्त की आत्मा पृ. सं.–525